ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 11 अंक 4 जुलाई–अगस्त 2019

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS

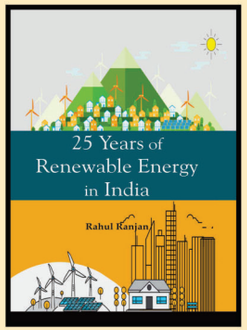

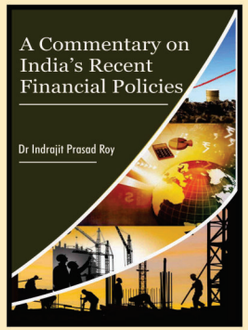

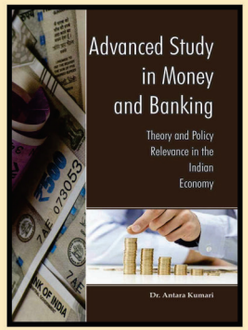

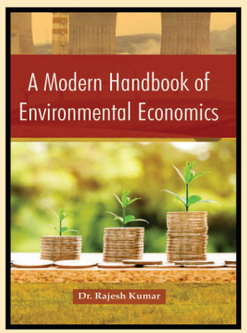

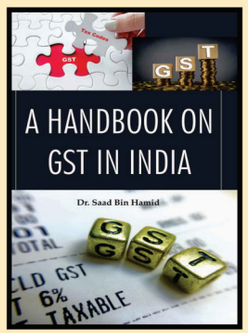

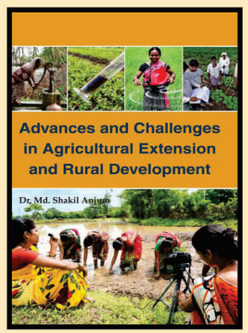

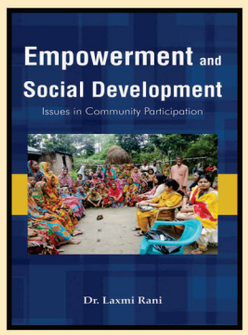

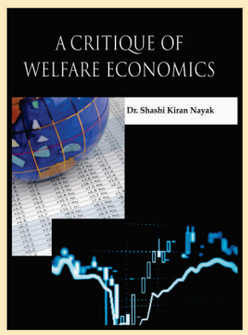

Global Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 11 अंक : 4 ❑ जुलाई–अगस्त, 2019

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

प्रो. लॉरेंस ओएडिजी
वेगेनिंग्न विश्वविद्यालय, नीदरलैंड
डॉ. मार्टिन ग्रिन्डले
नॉटिंग्म विश्वविद्यालय, लंदन
डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरवोरोग, ओन्टारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. सुरज नन्दन प्रसाद
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. सी.पी. शर्मा
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

संपादक

इस अंक में

घरेलू हिंसा के विविध रूप–डॉ० कमलेश कुमार 1

मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे प्रभासक योगदान–पुष्पम ज्योति 3

बाल केन्द्रित शिक्षा व संबेगात्मक विकास–डॉ० कल्पना जैन; रत्नेश कुमार जैन 6

भारत की विदेश नीति पड़ोसी देश के संदर्भ में–डॉ० अरविन्द नेत्र पाण्डेय 11

चीन की पाकिस्तान में रूचि–डॉ० धर्मेन्द्र कुमार उपाध्याय 13

'वरूण के बेटे' उपन्यास में आदिवासी मछुआ जीवन: आख्यान और विमर्श–अरविन्द कुमार अवस्थी 16

स्त्री मुक्ति की चुनौतियां और परिवार-आपका बंटी–डॉ० मीरा कश्यप 20

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी संदर्भ–डॉ० नम्रता जैन 23

बाल शिक्षा के जनक गिजुभाई के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता–रत्नेश कुमार जैन 26

भारत मे कैदियो के मताधिकार - एक विधिक अध्ययन–डॉ० क्षेमेन्द्र मणि त्रिपाठी; राम दुलार सोनकर 30

''भारत के माड़िया जनजाति में युवागृह की भुमिका'' (छत्तीसगढ़ के अबुझमाड़ क्षेत्र के माड़िया के संदर्भ में)–डॉ० कविता कन्नौजिया 33

शिक्षा की गुणवत्ता में I.C.T. के गुणात्मक प्रयोग से शैक्षिक प्रणाली में डिजीटलीकरण–डॉ० माधुरी सिंह 38

भारतीय स्वाधीनता संग्राम और विद्यार्थी–डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय 40

माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता का उनके सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में अध्ययन–डॉ० धर्मेन्द्र कुमार; डॉ० निदा खान 43

इलाहाबाद में उग्रवादी आन्दोलन–डॉ० अनीता प्रकाश 46

महिला सशक्तिकरण में मनरेगा की भूमिका–डौली कुमारी; सुदीप कुमार 50

वैश्विक परिदृश्य में गीता का मूल्य–डॉ० अजायब सिंह 54

विद्यालयी शिक्षा में कार्यरत ग्रामीण व शहरी परिवेश के शिक्षको (अध्यापक व अध्यापिकाओं) के मूल्यों (सैद्धांतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौंदर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, एवं धार्मिक मूल्य) का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० अजय सिंह यादव 58

वैदिक वाङ्मय: एक तथ्यात्मक विवेचन–डॉ० सुगन्धा जैन 65

उद्योगों का स्तर: कार्यक्षमता पर प्रभाव–डॉ० रोमी अरोड़ा 70

रूस की विदेश नीति एवं वैश्विक महत्वाकांक्षाएं–शैलेन्द्र कुमार 73

'तीसरी कसम' कहानी में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना एवं प्यार की उत्कृष्टता–राम चरण मीना 77

पं० दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म दर्शन और राष्ट्र चिंतन–डॉ० संजय कुमार 80

आधुनिक भारत के निर्माता: डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर–प्रा० डॉ० मनोहर भंडारे 85

भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता: स्वरूप एवं इसको प्रभावित करने वाले कारक–मोनिका विजय 89

संस्कृत साहित्य में शतककाव्य-एक अध्ययन–डॉ० ज़ेबा खान 96

संवैधानिक नैतिकता एवं लोक नैतिकता: एक सामाजिक एवं विधिक विश्लेषण–मरयम इशरत बेग 99

भारतीय लोकतंत्र एवं दबाब समूह : एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० पुष्पांजली कुमारी 102

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन–डॉ० रोहित कुमार त्रिवेदी 106

प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का विद्यालय की स्वच्छता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–संतोष कुमार यादव; डॉ० शिवराज कुमार 111

भारतीय अर्थव्यवस्था में आवास क्षेत्र का महत्व–किरण कुमारी 115

भारतीय जनमत निर्माण में प्रेमचन्द की पत्रकारिता का योगदान–अहमद रजा 119

उत्तरआधुनिकता और उपभोक्तावाद: मृगतृष्णा या वास्तविक सुख की तलाश–डॉ० रमेश कुमार बर्णवाल 125

अर्वाचीन कवियित्री पंडिता क्षमाराव का संस्कृत साहित्य में योगदान–डॉ० मीना गुप्ता 129

धुमिल का काव्य संग्रह 'संसद से सड़क तक' : व्यवस्था विरोध का जीवंत दस्तावेज–डॉ० मलकीयत सिंह 132

धुमिल का काव्य संग्रह 'संसद से सड़क तक' : व्यवस्था विरोध का जीवंत दस्तावेज

डॉ० मलकीयत सिंह

सहायक प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, धर्मशाला

संसद से सड़क तक सुदामा पाण्डे धूमिल का पहला कविता संग्रह 'संसद से सड़क तक' सन् 1972 प्रकाशित हुआ। इस में कविताओं का चयन स्वयं धूमिल ने किया था। इस संग्रह में उन की कुल पच्चीस कविताएँ हैं। संकलित कविताओं के शीर्षक इस प्रकार है। 'कविता', 'बीस साल बाद', 'जनतन्त्र के सूर्योदय में', 'अकाल दर्शन', 'बसन्त', 'एकान्त कथा', 'शांति पाठ', 'उस औरत की बगल में लेटकर', 'राजकमल चौधरी के लिए, 'मोचीराम', 'शहर में सूर्यास्त', 'प्रौढ़ शिक्षा', 'मकान', 'एक आदमी', 'शहर का व्याकरण', 'पतझड़', 'कवि 1970', 'नक्कसलबाड़ी', 'शहर', शाम और एक बूढ़ा मैं, 'सच्ची बात', 'हत्यारी सम्भावनाओं के नीचे', 'मुनासिब कारवाई', 'भाषा की रात' तथा 'पटकथा'। आकार की दृष्टि से इन सब कविताओं में 'पटकथा' सब से लम्बी कविता है। 'भाषा की रात', 'राजकमल चौधरी के लिए', 'प्रौढ़ शिक्षा', 'कवि 1970' तथा 'मोचीराम' कविता को आकार की दृष्टि से पटकथा के बाद की श्रेणी में रखा जा सकता है। 'संसद से सड़क तक' कविता संग्रह समकालीन कविता में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। सम्भवत: इस ने आलोचना का मुख कविता की ओर कर दिया।"[1]

इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ सोद्देश्य है। यह संग्रह सही अर्थों में स्वतन्त्र भारत की व्यथा कथा है।"[2] यद्यपि इस संग्रह में संसद से सड़क तक शीर्षक की कोई कविता नहीं है। तथापि यह शीर्षक उचित बन पड़ा है। इस संग्रह की लगभग सभी कविताएँ किसी न किसी स्तर पर संसद या सड़क से जुड़ी है। संसद अर्थात् भारतीय राजनीति सड़क अर्थात् भारतीय मामूली आदमी"[3] इस कविता संग्रह में धूमिल ने संसद और सड़क शब्दों का इक्ट्ठा प्रयोग 'भाषा की रात' कविता में किया है:

भाषा उस तिकड़मी दरिन्दे का कौर है
जो सड़क पर और है
संसद में और है
इसलिए बाहर आ
संसद के अंधेरे से निकल कर सड़क पर आ।"[4]

कथ्य अथवा विषय प्रतिपादन की दृष्टि से इस कविता संग्रह में संकलित कविताओं में क्रमश: राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विषमताओं के साथ वर्ग चेतना, नारी स्थान, एवं नक्कसलवाड़ी आन्दोलन की सांकेतिक अभिव्यक्ति हुई है। कवि की राजनीतिक समझ ऐतिहासिक बोध, एवं सामाजिक दायित्व के साथ, वर्ग चेतना की सही पहचान, इन सभी की सपाट एवं संश्लिष्ट अभिव्यक्ति इन की कविताओं में हुई है।"[5]

इन की प्रत्येक कविता सोद्देश्य और अर्थपूर्ण है। कविता संग्रह के आमुख पृष्ठ पर इन्होंने कविता को पहले एक सार्थक वक्तव्य माना है। पहली कविता 'कविता' में समकालीन कविता की दुरुहता और सम्प्रेषणहीनता के सम्बन्ध में विचार है जो आम आदमी की पकड़ से दूर थी। धूमिल ने इन्हें 'बैलमुती इबारतें' और 'तस्कर संकेत' कहा है-

नहीं /
अब वहाँ कोई अर्थ खोजना व्यर्थ है
पेशेवर भाषा के तस्कर संकेतों /और बैलमुती इबारतों में अर्थ खोजना व्यर्थ है।"[6]

आजादी से लोगों ने बहुत उम्मीदें लगाई थी लेकिन वे सब धराशायी हो गयीं थीं। आम आदमी के लिए आजादी का मतलब कुछ नहीं रह गया था। अपनी असमर्थता तथा लाचारी का आम आदमी के पास कोई जवाब नहीं था। वह व्यवस्था का सताया हुआ भी उसी में जीने को मजबूर था 'बीस साल बाद' कविता में कवि कहता है,

बीस साल बाद में आपने - आप से एक सवाल करता हूँ /
जानवर बनने के लिए कितने सब्र की जरूरत होती है?
और बिना किसी उत्तर के चुपचाप आगे बढ़ जाता हूँ।"[7]

आजादी का यहाँ आम नागरिक के लिए कोई अर्थ नहीं था वह मात्र खोखला नारा था,

क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है ?
जिन्हें एक पहिया ढोता है।
या इस का कोई खास मतलब होता है ?"[8]

श जनतंत्र के सूर्योदय में श्धूमिलश ने राजनीतिक षड्यन्त्र पर विचार किया है । हमारे समाज के ठेकेदार जनता का शोषण करने में सिद्धहस्त हो गये हैं । इस में राजनीतिज्ञों की चालबाजियों और हथकंडों का अंकन हुआ है :

सिर कटे मुर्गे की तरह फड़कते हुए जनतंत्र में
सुबह सिर्फ
चमकते हुए रंगों की चालबाजी है।"[9]

इस जनतंत्र में विश्वास योग्य कोई भी नहीं मानवीय सम्बन्धों में पशुता आ गयी :

शहर की समूची पशुता के खिलाफ गलियों में नंगी घूमती हुई /
पागल और के 'गाभिन पेट' की तरह /
सड़क के पिछले हिस्से में छाया रहेगा
पीला अंधकार।"[10]

यहाँ आन्दोलनों की भाषाएँ भी कुछ सुविधाओं के आगे बदल जाती है:

लेकिन तुम चुप रहोगे और /लज्जा को उस निरर्थ गूंगेपन से सहोगे /यह जानकर कि तुम्हारी मातृभाषा / उस महरी की तरह है,
जो/महाजन के साथ रात भर/सोने के लिए एक साड़ी पर राजी है।"11

'अकाल दर्शन' कविता में देश के कर्णधारों से सीधा प्रश्न पूछा गया है कि भूख कौन उपजाता है? नेता इस का कारण जनसंख्या वृद्धि बताता है और अपना पल्लू झाड़ लेता है। लेकिन कवि इस की तुलना उन वायदों से करता है जो नेताओं ने किये है:

और सहसा मैंने पाया कि मैं
खुद अपने सवालों के सामने खड़ा हूँ
और उस मुहावरे को समझ गया हूँ
जो आजादी और गाँधी के नाम पर चल रहा है /
जिस से न भूख मिट रही है, न मौसम बदल रहा है।"[12]

यूँ तो भारत को अन्न उत्पादन में स्वावलंबी माना जाता है लेकिन यह अनाज जाता कहाँ है ? लोक कल्याण के लिए बनायी गयी योजनाएँ और उन का लाभ किन लोगों को मिल रहा है? वह कौन सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है जिस के चलते अमीरी - गरीबी की दीवार निरन्तर बढ़ती जा रही है और इस में शोषित जनता; वह तो मानों चेतनाहीन हो गयी है।:

वे चुपचाप सुनते हैं उन की आँखों में विरक्ति है;/
पछतावा है संकोच है / या क्या है कुछ पता नहीं चलता / वे इस - कदर पस्त है ;
कि तटस्थ है।"[13]

बसंत कविता में धूमिल ने मनुष्य के उपयोगितावादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है। जहाँ किसी को किसी के प्रति सच्ची आत्मीयता नहीं उस का परस्पर मिलना भी तथा वे किसी स्वार्थवश ही सम्बन्ध रखते हैं:

मेरे आस - पास एक अजीब सा स्वाद भरा सखापन है
उधार देने वाले बनिये के नमस्कार की तरह
जिसे में मात्र इस लिए सहता हूँ
कि इसी के चलते मौज से रहता हूँ।"[14]

लोग सौन्दर्य को भी उपयोगिता की दृष्टि से देखते हैं, जिस वस्तु या सन्दर्भ का उन के लिए कोई महत्त्व नहीं वह उन के लिए त्याज्य है :-

सौन्दर्य में स्वाद का मेल
जब नहीं मिलता
कुत्ते महुये के फूल पर मूतते हैं।"[15]

'एकांत कथा' कविता आत्माभिव्यक्ति - मूलक प्रतीत होती है परन्तु गहराई से देखने पर यह समष्टि का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत होती है । यहाँ व्यक्ति यद्यपि अपने व्यवहार से समाज में अपनी अलग पहचान बनाए हुए है लेकिन अपनी बाह्य शालीनता के बावजूद वह उन तमाम विसंगतियों में हिस्सेदार है जिन्हें वह बाहर देखता है :

जब सड़कों पर होता हूँ / बहसों में होता हूँ ; /
रह - रह कर चहकता हूँ /
लेकिन हर बार वापस घर लौट कर /
कमरे के अपने एकांत में
जूते से निकाले गये पाँव - सा / महकता हूँ।"[16]

'शांति पाठ' कविता में देश की आजादी के बाद की नीतियों की असफलता और पड़ोसी देशों की दोस्ती के नाम पर मक्कारी पर व्यंग्य किया है। जहाँ हम अपने देश की आजादी में पड़ोसियों को शरीक कर खुशी मना रहे थे वहीं जवाब में पड़ोसी बारूदी सुरंगें बिछा रहे थे। हमारे शांति के नारे और पंचशील के सिद्धान्त खोखले साबित हुए। देश में बेकारी बढ़ी है, योजनाएँ कागजों तक सीमित रह गयीं। पड़ोसी देश चीन द्वारा इस अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा का उल्लंघन करने पर भी भारत की निष्क्रियता उस के मुर्दा होने का संकेत देती है। हमारी विदेश नीति भी वेश्या नीति बन कर रह गयी है कवि कहते हैं-:

जरायमपेशा औरतों की सावधानी और संकटकालीन क्रूरता /
मेरी रक्षा कर रही है।"[17]

यहाँ जरायमपेशा औरतें वे वेश्याएँ हैं जो गर्भ धारण सावधानी बरतती हैं परन्तु संकट के समय बड़ी क्रूरता के साथ गर्भपात करवाने से नहीं हिचकिचाती। 'उस औरत की बगल में लेटकर' कविता में उन्होंने 'रसोई घर की टूटी पतीलियों के माध्यम से समकालीन जीवन के यथार्थ को महत्त्व दिया है। मात्र काम - क्रीड़ा को अपर्याप्त माना है:

बक्त को रगड़कर /मिटा देने के लिए सिर्फ उछलते शरीर ही /काफी नहीं है; जबकि हमारा चेहरा / रसोईघर की फूटी पतीलियों के सामने है।"[18]

'राजकमल चौधरी के लिए' राजकमल चौधरी की मृत्यु पर उन्हें श्रद्धांजली स्वरूप लिखी गयी है धूमिल राजकमल की यथार्थवादिता और स्पष्टवादिता का सम्मान करते हैं: 'उस का मर जाना पतियों के लिए /अपनी पत्नियों की पतिव्रता होने की गारंटी है"।[19]

आजादी पर भी व्यंग्य करते हुए कहा गया है कि आजादी को पाकर हमारे सामने कोई उज्ज्वल भविष्य नहीं है वे कहते हैं-

आजादी इस दरिद्र परिवार की बीससाला 'बिटिया' / मासिक धर्म में डूबे हुए क्वाँरेपन की आग से / अंधे अतीत और लंगड़े भविष्य की / चिलम भर रही है।"[20]

इस कविता में जहाँ देश की वर्तमान व्यवस्था का चित्रण है। वहीं राजकमल चौधरी की साहसिकता और कविता के प्रति उस के समर्पण भाव को अभिव्यक्त किया गया है। 'मोचीराम' इस संग्रह की एक महत्त्वपूर्ण कविता है। इस में जातीय तथा वर्गीय चेतना के माध्यम से समाज का चिन्तन प्रस्तुत किया गया है। यह कविता कथ्य एवं शिल्प के धरातल पर समकालीन हिन्दी जगत में ऐतिहासिक स्थान रखती है जहाँ यह कविता कथ्य के बदलाव के स्तर पर नवीन अर्थवत्ता देती है वहीं संदर्भों में एकाएक बदलाव अनायास ही उत्पन्न हो जाता है। यहाँ कविता 'मोचीराम' के व्यावसायिक कार्य से प्रारम्भ हो कर धूमिल की रचना प्रक्रिया, सृजनात्मक चेतना और रचनात्मक दायित्व की सांकेतिक अभिव्यक्ति भी देती चलती है। 'मोचीराम' रचयिता का अनुभवी पारदर्शी चित्रण है, जो समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति से भीतरी और बाहरी दोनों धरातलों पर पैनी, सूक्ष्म एवं सक्लिष्ट दृष्टि आत्मसात किए हुए हैं। वह प्रत्येक व्यक्ति एवं वर्ग की पहचान उस के बाहरी रूप से न कर के व्यक्ति के अन्तर्मन के अन्त:स्तलों में उतर कर करता हुआ उस के चरित्र की पहचान 'जूते' के माध्यम से करता है"।[21]

न कोई छोटा है / ने कोई बड़ा है।
मेरे लिए हर आदमी /
एक जोड़ी जूता है जो मेरे सामने मुरम्मत के लिए खड़ा है।"[22]

इस कविता में उन साहित्यकारों पर भी व्यंग्य किया गया है जो यथार्थ से दूर अनुभवों को ही अपनी लेखनी में ढालते हैं और रचना के दौरान अपने स्वार्थ का ध्यान रखते हैं। 'शहर में सूर्यास्त' कविता में भाषा- विवाद तथा देश में व्याप्त चरित्रहीनता के द्वारा जनतंत्र पर व्यंग्य किया गया है तथा इस देश की आजादी से लगाई गई उम्मीदों का मोहभंग भी प्रस्तुत हुआ है। 'प्रौढ़ शिक्षा' कविता में किसान वर्ग, मजदूर वर्ग को व्यवस्था के षड़यन्त्र से बचने का आह्वान किया गया है। उस में वोट के नाम पर उन नारों की पोल खोली गयी है जिन के माध्यम से राजनीतिज्ञ अपनी रोटियाँ सेंकते हैं लेकिन मजदूर वर्ग वहीं का वहीं रह जाता है। मजदूर वर्ग की अनपढ़ता और अज्ञानता का लाभ उठा कर ही यह सुराजिये; नेता लोग उन का शोषण कर रहे हैं। वे कहते हैं -

उन्हें तुम्हारी भूख पर भरोसा था /
सब से पहले उन्होंने भाषा तैयार की जो तुम्हें न्यायालय से लेकर
नींद से पहले की
प्रार्थना तक गलत रास्तों पर डालती थी /
वह सच्च पृथ्वीपुत्र है /
यह संसार का अन्नदाता है
मगर तुम्हारे लिए कहा गया हर वाक्य /एक धोखा
है जो तुम्हे दलदल की ओर ले जाता है।"[23]

धूमिल ने उन्हें इस शोषक प्रक्रिया से उबारने का संदेश दिया :

इसीलिए मैं फिर कहता हूँ कि हर हाथ में
गीली मिट्टी की तरह हाँ हाँ मत करो
तनो/ अकड़ो
अमरबेल की तरह मत जियो
जड़ पकड़ो।"[24]

'मकान' कविता में धूमिल ने स्व- परिवर्तन को प्रस्तुत किया है। आदमी का दायरा जो परिवार तक ही सीमित रह गया है। यह एकांत ही व्यक्ति का आत्मसाक्षात्कार है। 'एक आदमी' कविता भी इसी भाव को स्पष्ट करती है 'शहर का व्याकरण' कविता आम आदमी के व्यवस्था द्वारा संचालित होने की पीड़ा तथा भय को प्रस्तुत करती है। 'नगरपालिका' के माध्यम से यहाँ सीधा व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है :

सचमुच मजबूरी है
मगर जिन्दा रहने के लिए
पालतू होना जरूरी है।"[25]

'पतझड़' कविता में कवि युवा पीढ़ी के मोहभंग और बेकारी की समस्या को उठाता है। उन से देश प्रेम की आशा करना तथा उन्हें अतीत की समृद्धता के किस्से सुनाना बेकार है।

'पतझड़ की प्रक्रिया' से गुजर रहे हैं

एकाएक- / जंग लगे अचरज से बाहर आ जाता है आदमी का भ्रम और देश - प्रेम । बेकारी की फटी हुई जेब से खिसक कर / गिर पड़ता है।"[26]

यहाँ बौखलाए हुए बेरोजगार के लिए आजादी तथा देश प्रेम का कोई मतलब नहीं :

मैंने रोजगार दफ्तर से गुजरते हुए नौजवान को / यह साफ - साफ कहते हुए सुना - / इस देश की मिट्टी में / अपने जांगर का सुख तलाशना / अंध ी लड़की की आँखों में उस से सहवास का सुख तलाशना है"[27]

'कवि 1970' में कवि ने तात्कालिक परिथितियों तथा साहित्यिक प्रतिबद्धता पर विचार किया है। यह एक ऐसा काल था जब अराजकता तथा मोहभंग अपने चरम पर या। ऐसे में कवि भी निहत्या है उस की कविता भी इस के खिलाफ खड़े होने में असमर्थ है 'आदमी गजल नहीं गा रहा है गजल आदमी को गा रही है"[28] अर्थात् गजल अब मनोरंजन का साधन नहीं अपितु वह कवि की व्यथा कथा बन कर रह गयी है। अराजकता के दौर में कविता से अतिशय उम्मीदें लगाना भी बेकार है -

कविता में जाने से पहले / में आप से ही पूछता हूँ ।
जब इस से न चोली बन सकती है ! न चोगा; / तब आप कहो /
इस ससुरी कविता को जंगल से जनता तक / ढोने से क्या होगा ?"[29]

कवि के द्वारा आदर्श और यथार्थ की बातें क्या उस के व्यावहारिक पक्ष में ठीक बैठती है ? अपनी स्वयं की स्थिति से भी कवि शर्मिंदा है -

में झेंपता हूँ
और धूमिल होने से बचने लगता हूँ
याने बाहर की दुर से
और भीतर की बिल - बिल होने से
बचने लगता हूँ"[30]

'नक्कसलबाड़ी' कविता में दक्षिण पंथी शक्तियों के विरुद्ध विरोध प्रकट किया गया है। उन की मक्कारी का पर्दाफाश किया गया है। इस में मूल स्वर असहयोग का है। इस घुटन भरे समाज के षड्यन्त्र पूर्ण माहौल में किसी के पास वैचारिक एकता का सवाल ही नहीं उठता भूखा आदमी देश प्रेम की बात नहीं कर सकता । उसका विरोध भी मात्र प्रदर्शन बनकर रह जाएगा। पुराने नारे खोखले पड़ चुके हैं। व्यवस्था तथा शोषण ने गठबन्धन कर लिया है और विपक्ष में सिर्फ कविता बची है । लेकिन इन सब के पीछे भूख की असहनीयता के विस्फोट के प्रति भी कवि सचेत करता है -

"खबरदार ! उस ने तुम्हारे परिवार को / नफरत के उस मुकाम पर ला खड़ा किया है /
कि कल तुम्हारा सब से छोटा लड़का भी /तुम्हारे पड़ौसी का गला / अचानक / अपनी स्लेट से काट सकता है।"[31]

भूख की विवशता को लेकर लिखी गयी कविता 'कुत्ता' भी मार्मिक बन पड़ी है। जिस ने यहाँ मजदूर वर्ग और साधारण आदमी की लाचारी को कुत्ते में माध्यम से व्यक्त किया है। जिस ने अपनी शख्सीयत, दांत और नख अपनी भूख के कारण गिरवी रख दिये हैं। उस का मालिक उस की इसी विवशता का लाभ उठाकर, उसे पालतू बनाकर अपने हितों की रक्षा करता है। व्यवस्था के विरुद्ध बोलने वाला भी अपने विवशता में अपने दांत और नख 'गिरवी रख देता है -

मगर भूलो कि इन से बड़ी बी वह बेशर्मी है
जो अन्त में

तुम्हें भी उसी रास्ते पर लाती है
जहाँ भूख उस वहशी को
पालतू बनाती है।"[32]

शहर, शाम और एक बूढ़ा में कविता में कवि ने जीवन के अन्तिम चरण पर पहुँचे व्यक्ति के आत्मचिन्तन को उभारा है; उसे गहराई से छुआ है। इस भीड़ भरे समाज में हर व्यक्ति अपने स्तर पर अकेला है। उस के सामाजिक बन्धन यद्यपि उसे व्यस्त रखते हैं तथापि कुछ फुर्सत के क्षण उस के जीवन की जटिलता पर विचार कर ही जाते हैं। वह अपने कर्म पर विचार करता है क्या उस ने कोई अस्तित्व स्थापना हेतु बड़ा कार्य किया या मात्र गृहस्थी में फंसा सिगरेट, शराब और नागरिकता के कानूनों को ही निभाया है। जहाँ सूरज नया जन्म लेने के लिए डूब रहा है और शहर अपने जुनून को शीशे की रोशनी में बदल रहा है वहाँ में अकेला अपने अतीत में खोया हूँ। 'सच्ची बात' कविता में कवि ने बाह्य परिवेश और आंतरिक चिन्तन को व्यक्त किया है। हर व्यक्ति के इमान का एक चोर दरवाजा होता है जो वेश्यालय में खुलता है । व्यक्ति उस पर हमेशा पर्दा डाले रहता है। वह उस की किसी को खबर नहीं होने देना चाहता , समाज की नजरों में वह आदर्श बना रहना चाहता है। वह चोर दरवाजे को सार्वजनिक कर भी नहीं सकता ह। क्योंकि:

दृष्टियों की धार में बहती नैतिकता का
कितना भद्दा मजाक है
कि हमारे चेहरों पर आँखों के ठीक नीचे ही नाक है।"[33]

हत्यारी सम्भावनाओं के नीचे श में व्यवस्था को खूनी ठहराया गया है। लोग शोषण को महसूस तो करते हैं पर उस के खिलाफ खड़े होने का साहस नहीं कर पाते। वे हार चुके हैं पूर्णतय: व्यवस्था द्वारा संचालित हैं। 'उन के लिए हर नये दिन का मतलब टूटना है, हारना है।"[34]

'मुनासिब कारवाई' कवि की एक सशक्त कविता है। इस में व्यवस्था के षड़यन्त्रों पर सीधा व्यंग्य किया गया है। इस के विरोध में आने का आह्वान किया गया है। यह सारा काम समय रहते ही करना होगा। उन की भाषा के खिलाफ उचित शब्द ढूंढने होंगे। इस के बिना विरोध सम्भव नहीं क्योंकि शहर के कोतवाल की नीयत और हथकड़ी का नम्बर एक ही है।" और कविता को 'कांटे' का सही रुख पता करना होगा। यद्यपि इस समय सच्चाई को जानना विरोध में होना है तथापि यह विरोध स्वीकार करना होगा। कविता तुम्हारे सही व्यक्तित्व की खोज कर रही है और तुम्हें समय रहते इस के मर्म को समझना होगा। अन्यथा व्यवस्था तुम्हें अकेला कर के खत्म कर देगी –

कविता, सिर्फ उतनी ही देर सुरक्षित है /
जितनी देर, कीमा होने से पहले,
कसाई के ठीहे और तनी हुई गंडास के बीच
बोटी सुरक्षित है।[35]

भाषा की रात कविता विशुद्ध राजनीतिक कविता है। इस में राजनीतिज्ञों के नारों और विकास योजनाओं को खोखला बताया है। यह भाषा की रात है जिस में लोगों को उल्लू बनाया जा रहा है। उन्होंने तुम्हारी भूख को मिटाने के लिए रोटी की जगह रखा है नारे रखे हैं, झूठे स्वप्न रखे हैं। चुनाव आते ही उन में मौकापरस्ती पूर्ण महानुभूति फिर से जगने लगती है तुम्हारी तुलना में पड़ोसी अधिक नंगा है यही दिलासा दे कर वह तुम्हारी वर्तमान स्थिति को ठीक घोषित कर जाते हैं। लेकिन तुम तो स्वयं अपनी स्थिति से परिचित हो।

इसलिए इस भाषा की रात से निकलकर बाहर आओ द्य कवि आह्वान करता है :

इसलिए बाहर आ /
संसद के अंधेरे से निकल कर सड़क पर आ।"[36]

प्रांतवाद और भाषावाद के भेद को मिटा दो तुम एक हो :–

यह साफ - साफ कह दे/
भूख जो कल तक रोशनी थी
आज, नींद से पहले का जागरण है।"[37]

इस संग्रह की सबसे लंबी कविता 'पटकथा' है। जो अपने आप में एक स्वत्तंत्र कविता संग्रह है। उसके कथ्य पर अगले लेख में विचार किया जाएगा।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि इस साधन संपन्न ,प्राकृत सौंदर्य से परिपूर्ण देश में व्याप्त भुखमरी, गरीबी, उंच–नीच धार्मिक कट्टरता के पीछे के षड्यंत्रों को धूमिल ने बखूबी पहचाना है और जंगल के कानून की मानसिकता पर करारा प्रहार किया है द्यपरदे के पीछे लुटेरी मानसिकता को उजागर किया है तथा क्रांति को भाषा प्रदान की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. काशीनाथ सिंह, आलोचना भी रचना है, पृ ० 17
2. कुमार कृष्ण, दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में धूमिल, भूमिका।
3. हुकुमचंद राजपाल , समकालीन बोध और धूमिल का काव्य , पृ 0 30

4. संसद से सड़क तक, पृ 20
5. हुकुमचंद राजपाल समकालीन बोध और धूमिल का काव्य पृ० 30
6. संसद से सड़क तक, पृ 8
7. वही, पृ० 9
8. वही पृ 10
9. वही पृ12
10. वही पृ 12
11. वही पृ 13
12. वही पृ 15
13. वही पृ 17
14. वही पृ 18
15. वही पृ 20
16. वही पृ 22
17. वही पृ 23
18. वही पृ 26
19. वही पृ 29
20. वही पृ 30
21. राकेश कुमार, धूमिल की काव्य चेतना पृ 56
22. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 36
23. वही पृ 23
24. वही पृ 47
25. वही पृ 57
26. वही पृ 60
27. वही पृ 60
28. वही पृ 61
29. वही पृ 62
30. वही पृ 64
31. वही पृ 69
32. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 72
33. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 80
34. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 86
35. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 96
36. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 97
37. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 97